मिन्स्क शांति समझौता: व्याप्त जटिलताओं के बीच आशा

डॉ. दिनोज कु. उपाध्याय*

यूक्रेन में शांति स्थापित करने के प्रयास में रूस, यूक्रेन, जर्मनी और फ्रांस के नेताओं ने बेलारूस की राजधानी मिन्स्क में 11 फरवरी, 2015 को वार्ता की। मिन्स्क की शांति वार्ता, जिसे 'बातचीत का अंतिम मौका' का नाम दिया गया, यूक्रेन संकट के राजनयिक समाधान को सुगम बनाने हेतु महत्वपूर्ण माना गया। हालांकि अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा रूस के विरूद्ध 'अहिंसक आर्थिक प्रतिबंध' का समर्थन करते हैं, परन्तु अमरीकी कांग्रेस के कट्टरपंथी नेता विद्रोहियों का सामना करने के लिए यूक्रेन को हथियार उपलब्ध कराने की मांग कर रहे हैं, जो, मास्को का मानना है कि, 'सम्पूर्ण युद्ध' की ओर ले जाएगा। यूक्रेन में वैमनस्य को बढ़ावा देने के गंभीर निहितार्थों पर विचार करते हुए जर्मन चांसलर एन्जेला मर्केल और फ्रांसीसी राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद ने इस संकट को और गहराने से रोकने के लिए एक राजनयिक पहल की। यूरोपीय राजनीतिक तंत्र महसूस करते हैं कि सैन्य तरीके यूक्रेन और वहां के क्षेत्र में स्थायी शांति लाने में सक्षम नहीं होंगे। जैसा कि जर्मन चांसलर मर्केल ने स्पष्ट रूप से कहा, "मैं ऐसी किसी स्थिति की कल्पना नहीं करती, जिसमें यूक्रेनी सेना के लिए उन्नत हथियार (उपलब्ध कराना) राष्ट्रपति पुतिन को इतना प्रभावित कर देगा कि वे मान लेंगे कि वे सैन्य युद्ध हार जाएंगे।" 11 फरवरी, 2015 को मिन्स्क आने से पहले चांसलर मर्केल और राष्ट्रपति ओलांद ने रूस, यूक्रेन और अमरीका के साथ व्यापक विचार-विमर्श किया तथा रूस पर आगामी आर्थिक प्रतिबंधों को भी यूरोपीय संघ द्वारा स्थगित रखा गया।

मिन्स्क वार्ताओं ने एक 13 सूत्री विस्तृत करार: 'मिन्स्क करार के पालन के लिए संकुल उपाय' प्रस्तुत किया जो पूर्वी यूक्रेन में तत्काल युद्धविराम की मांग करता है। चार नेताओं द्वारा जारी किया गया संयुक्त वक्तव्य क्षेत्रीय अखंडता और इस संकट के राजनयिक समाधान की पुष्टि करता है। इस करार में वर्ष 2015 के अंत तक विद्रोही क्षेत्रों – दोनेत्स्क और लुहान्स्क के विकेन्द्रीकरण तथा घातक हथियारों के प्रत्याहरण की व्यवस्था है। इस बात पर भी सहमति हुई कि लड़ाई में शामिल कैदियों को आम माफी दी जाएगी; सभी विदेशी लड़ाकों को वापस बुला लिया जाएगा; सभी अवैध समूहों को नि:शस्त्र किया जाएगा और विद्रोही क्षेत्रों से प्रतिबंध उठा लिए जाएंगे। युद्धविराम का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए इस करार में यूरोपीय सुरक्षा एवं सहयोग संगठन (ओएससीई) द्वारा इसका अनुवीक्षण सुनिश्चित करने की व्यवस्था है। हालांकि युद्धविराम का उल्लंघन कई बार हुआ था; युद्ध की रिपोर्टें तब भी मिलती रहीं हैं, जब युद्धविराम करार लागू है; और कीव तथा विद्रोही दोनों ही घातक हथियार वापस लेने से इनकार कर रहे हैं, (तब भी) हाल में कुछ सकारात्मक गतिविधियां देखी गईं हैं। यूक्रेन सरकार और विद्रोहियों ने कैदियों का आदान-प्रदान किया है; लगभग 139 यूक्रेनी सैनिक और 52 विद्रोही रिहा किए गए थे। विद्रोही घातक हथियारों को हटा लेने के लिए भी सहमत हो गए। युक्रेनी राष्ट्रपति पेट्रो पोरोशेंको ने पुष्टि की है कि यूक्रेनी बलों और विद्रोहियों ने 'बड़ी मात्रा में' घातक हथियारों को हटा लिया है।

रूस और उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के बीच बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के बीच, जैसा कि यूक्रेन के संकट पर बौद्धिक अभिभाषण इंगित करते हैं, यह कहना न्यूनीकारक होगा कि यह समझौता इस क्षेत्र में दीर्घकालिक शान्ति स्थापित कर पाएगा; यह अस्थायी संघर्षविराम ला सकता है। अपने विश्लेषण में डेर स्पीगेल स्टॉफ ने ठीक ही कहा, "यह प्रश्न चिन्हों से भरा एक कमजोर समझौता है; एक ऐसा समझौता, जो केवल तभी सफल हो सकता है, जब सभी पक्षकार इसका पालन करने के प्रति स्वयं को समर्पित करें। ... मिन्स्क समझौता संक्षिप्त राहत है ... लेकिन फिर भी, यह एक सफलता है।" इस क्षेत्र में व्यापक और दीर्घकालिक शान्ति इस बात पर निर्भर करेगी कि पश्चिमी और रूसी नीतियां एक-दूसरे के प्रति भविष्य में कैसा स्वरूप लेती हैं। मास्को ने स्पष्ट रूप से कहा है कि वह नाटो के विस्तार अथवा यूक्रेन को हथियार दिए जाने का विरोध करेगा। इससे पहले पूर्व दिशा में नाटो के विस्तार ने भी रूस में बेचैनी पैदा की थी। यूक्रेन की भौगोलिक स्थिति रूस-यूरोपीय संघ ऊर्जा सम्पर्कों के लिए महत्वपूर्ण है। इस लिए, मास्को यूक्रेन पर अपने राजनीतिक प्रभाव को कमजोर करना नहीं चाहेगा।

राष्ट्रपति पोरोशेंको को रूसी 'पूर्ण स्वतंत्र व्यक्तित्व' नहीं मानते। *Pravda.ru* (प्रवदा.रू) को दिए एक साक्षात्कार में, जूलियस फेदोरोव का कहना है, "... वे वास्तव में वाशिंगटन का मुखौटा हैं ..."

उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) की रणनीति संकेत देती है कि वह रूस के साथ लंबे समय तक टकराव के लिए तैयार लगता है। नाटो के उप महा-सचिव एलेक्जेंडर वर्शोव ने कहा, "पश्चिम को यूक्रेन (के मुद्दे) पर रूस के साथ एक लंबे टकराव के लिए तैयार रहना होगा और तुरंत सामान्य संबंध बहाल नहीं करने होंगे, जैसा कि इसने वर्ष 2008 में जार्जिया युद्ध के बाद किया था। हमें धैर्य और स्थिरता की रणनीति बनानी होगी। रूस अपने व्यवहार में परिवर्तन किए बिना ही हमसे प्रतिबंधों को हटाने और हमेशा की तरह व्यापार करने की आशा करता है।" यूरोपीय देश रूस और उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के बीच बढ़ रहे तनावों के कारण बेचैन जान पड़ते हैं। संघर्ष में तेजी आने के गंभीर राजनीतिक और आर्थिक निहितार्थ हो सकते हैं। यूक्रेन संकट के कारण हुई मानवीय क्षति बढ़ती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, यूक्रेन संकट के दौरान 5,400 से अधिक व्यक्ति मारे जा चुके हैं और लगभग 12,972 व्यक्ति घायल हुए हैं। अनुमान है कि लगभग 12 लाख यूक्रेनवासी अपने घरों से भाग गए हैं और लगभग 52 लाख व्यक्ति संघर्ष वाले क्षेत्रों में रह रहे हैं। जर्मन चांसलर मर्केल ने कहा, "... (यूक्रेन) संकट सैन्य तरीके से नहीं सुलझाया जा सकता। अत: अब यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि ठोस कदम उठाए जाएं, जो मिन्स्क करार को वास्तविकता में बदल सके। ... यह स्पष्ट नहीं है कि वे सफल होंगे या नहीं। फिर भी, फ्रांसीसी राष्ट्रपति और मैं सहमत हैं कि इसके लिए प्रयास करना सार्थक होगा।" यूरोपीय राजनीतिक अभिभाषणों में रूसी-समर्थक स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। ऐसी भी एक राय है कि अमरीकी भू-राजनीतिक योजना इस क्षेत्र में शान्ति की राह का रोड़ा बनेगा और मास्को के विरूद्ध आर्थिक प्रतिबंध यूरोप के लिए लाभदायक नहीं होंगे। नेशनल फ्रंट की नेता मारीन ल पेन ने कहा, "अमरीकियों का इरादा यूरोप में युद्ध प्रारंभ कर नाटो को रूसी सीमा की ओर धकेलने का है।" ब्लादिमीर पुतिन ने हंगरी का सरकारी दौरा किया, जो पिछले वर्ष यूक्रेन में संकट के प्रारंभ के बाद से यूरोपीय संघ के किसी भी सदस्य राष्ट्र की उनकी पहली यात्रा थी।

जैसा कि कुछ विश्लेषकों ने टिप्पणी की है कि ब्लॉदिमीर पुतिन की नीति पर्याप्त संकेत देती है कि वे परस्पर महत्व के क्षेत्र में पश्चिम के साथ संपर्क के लिए तैयार जान पड़ते हैं, लेकिन वे इसमें (पश्चिम को) कूटनीतिक रियायतें नहीं देंगे। यूरोपीय संघ रूस का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है। पश्चिमी आर्थिक प्रतिबंधों, तेल के घटते दामों और रूबल के (भाव) गिरने के कारण रूसी अर्थव्यवस्था के

भविष्य में कमजोर होने की संभावना है, जो राष्ट्रपति पुतिन को यूक्रेन के प्रति कम आक्रमक होने के लिए बाध्य कर सकता है। सेरेना गियुस्टी और तोमीस्लावा पेन्कोवा लिखती हैं, "रूस और यूरोप के बीच संबंधों का सम्पूर्ण इतिहास आकर्षण (कभी-कभार मास्को द्वारा अनुकरण) और सहयोग करने की आवश्यकता से प्रेरित है जो समय-समय पर प्रतिस्पर्धा और अविश्वास में बदल जाता है।" राष्ट्रपति पुतिन ने भी कहा है कि पड़ोसी यूक्रेन के साथ युद्ध 'संभावित प्रतीत नहीं होता'; और वे मिन्स्क युद्धविराम समझौते को पूर्वी यूक्रेन को स्थिर बनाने का सर्वोत्तम तरीका मानते हैं। यह करार शान्ति की ओर बढ़ाया गया कदम है, लेकिन यह अनिश्चित है कि रूस, यूरोपीय संघ और उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) कैसे अपनी नीतियों में तालमेल कायम करेंगे ताकि उनके बीच व्याप्त अविश्वास दूर हो सके और वे इस क्षेत्र में शांति को बढ़ावा देने के लिए सहयोग कर सकें।

***

*डॉ. दिनोज कु. उपाध्याय विश्व मामलों की भारतीय परिषद, सप्रु हाउस, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।